प्रचीन चिन्ह

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण मई 2016

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : करूणा जेरोम, बाईफेथ डिज़ाईन्ज

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Ancient Landmarks)

प्रचीन चिन्ह

"यहोवा यों भी कहता है: "सड़कों पर खड़े होकर देखो, और पूछो कि प्राचीनकाल का अच्छा मार्ग कौन-सा है, उसी में चलो, और तुम अपने अपने मन में चैन पाओगे।"

यिर्मयाह 6:16

विषय सूची

1.	हमारे चारों ओर का संसार	1
2.	मसीही संसार में बदलाव की हवा बह	5
3.	कौन से प्राचीन चिन्ह हैं	7
4.	हमारे प्राचीन चिन्ह	13
5.	समर्पण की आह्वान	30

1
हमारे चारों ओर का संसार बदल रहा है

“प्राचीन चिन्ह” का सन्देश ऐसा है जो मेरे मन में कुछ समय से घूम रहा है। जिसे मैं अब आपके साथ इस पुस्तक के माध्यम से बाँट रहा हूँ। शायद यह ऐसा सन्देश है जिसे मैं अपने अंतिम सन्देश के तौर पर प्रचार कर रहा हूँ। और आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़ देता कि वे उस दौड़ को वहाँ से जारी रखें जहाँ से मैं छोड़कर जाता। यह सन्देश मुख्यत: बंगलौर जैसे शहर की कलीसिया को सम्बोधित किया गया है और भारत के गाँवों तथा छोटे कस्बों के लिए तुरन्त लागू नहीं हो सकता है।

हमारे रहन-सहन के तरीकों में बदलाव

यदि हम अपने वयस्कों (वे जिनकी उम्र 25+ है) तथा किशोरावस्था (जो 1984 और 2001 के बीच उत्पन्न हुए) के लोगों की तुलना करें तो बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम सूचीबद्ध कर सकते हैं जो संसार से विसंगत हैं, जिसमें हम पले बढ़े हैं:

- हमारे पास एक काला और सफेद टेलीविज़न था जिसमें एक ही चैनल था–दूरदर्शन। परन्तु आज की युवा पीढ़ी पोगो, एन. बी.सी. एम. टी.वी, स्टार वर्ल्ड आदि के साथ बढ़ रहे हैं। मीडिया का क्षेत्र बदल गया है। युवा वर्ग मीडिया के साथ उन्नति कर रहे हैं।
- हम चक्के वाली फिल्म और रिकार्ड के साथ बड़े हुए हैं। वे डी.वी. डी., एम. पी. 4 और आइपोड के साथ बड़े हो रहे हैं। उनमें से बहुतों ने रिकार्ड देखा भी नहीं है।
- हम अम्बैसडर, प्रीमियर पद्मिनी, मारुति, टाटा, बिरला आदि के साथ बड़े हुए हैं। वे होण्डा, टोयोटा, बी. एम. डब्ल्यू, माइक्रोसॉफ्ट, आई. बी. एम, गूगल आदि के साथ बड़े हो रहे हैं।

- हम थम्स-अप, बॉजल और फैण्टा के साथ बड़े हुए हैं वे कोक, डाइटकोक और पेप्सी के साथ बढ़ रहे हैं।
- हम स्थानीय "मील्स रैडी" नामक कामत रेस्टोरैण्ट में कॉफी पिया करते थे। "वे कैफे कॉफी डे" में कॉफी पीते हैं।
- यदि हमारे घर पर एक डायल फोन होता था तो यह बहुत बड़ी बात थी। पड़ोसी कभी-कभी हमारे घर फोन करने आते थे। वे आज पी.डी.ए., एम.एम.एस. के साथ बड़े हो रहे हैं। उनमें से बहुतों ने पुराने फोन कभी डायल भी नहीं किए और न ही वे कभी कर पाएंगे।
- कालेज के दिनों तक मैंने कभी कम्प्यूटर पर काम नहीं किया और अपना प्रथम पावर पाइण्ट प्रर्दशन बीस वर्ष की उम्र में बड़ी कठिनाई से बनाया। आज मेरा दस वर्षीय पुत्र जोशुआ एनीमेटेड प्रर्दशन पावर पाइण्ट में बनाता है, अपने एम.पी.4 में संगीत डाउनलोड करता है, गूगल में खोजता है, विकीपीडिया में खोज करता है और रुत, मेरी सात वर्षीय पुत्री वह भी बहुत पीछे नहीं है, अपने भाई से बहुत कुछ सीख रही है।
- जब हम खेलते थे, तो हमारे मित्र गली के बच्चे ही होते थे। आज के किशोर विश्व के समुदाय के साथ रहते हैं जो तत्काल रन्त सन्देशों, व्लॉग्स, औरकुट, माईस्पेस, फेसबुक और अन्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स के द्वारा ऑनलाइन कम्युनिटीज के साथ जुड़े हैं। वे संसार के किसी भी कोने में अपने मित्रों से बात कर सकते हैं अथवा खेल सकते हैं।

जिस संसार में हमारे किशोर और बच्चे बढ़ रहे हैं जिस संसार में अभी हम जी रहे हैं-वह उस संसार से बहुत भिन्न है जिसमें हम बढ़े हैं। किशोर और हम इस नए संसार के स्थानिक निवासी हैं, जिसमें वे बढ़े हैं! हम इस नए संसार में यात्री है।

हमारे शहर में बदलाव

मजदूरी

पहले, साढ़े पाँच वर्ष का गहन अध्ययन करने और शायद कुछ और वर्षों तक विशेषज्ञ बनने के बाद एक डाक्टर का प्रारम्भिक वेतन शायद रु. 3000/- होता था। परन्तु आज अपनी कॉलेज की पढ़ाई अधूरी छोड़कर एक कॉल सैन्टर में काम करने वाला व्यक्ति लगभग रु. 15000/- कमाता है!

सुपरमार्केट से शॉपिंग मॉल्स

जब हम बड़े हो रहे थे तब प्रायः हम स्थानीय सुपर बाजार में अथवा शॉपिग काम्पलैक्स में खरीददारी करते थे जिसके बारे में अधिक कुछ कहने की जरूरत नहीं। वहाँ वातानुकूलित, स्वयंचालित सीढ़ियाँ अथवा लिफ्ट नहीं थी। आज हमारे शहर में वातानुकूलित, बहुमंजिली शॉपिग मॉल्स हैं जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय वस्तुओं की उपलब्धता के साथ।

इसके अतिरिक्त, हम जीवनशैली, जीवन के प्रति दृष्टिकोण आदि बातों में भी अनेक बदलाव पाते हैं।

संसार के दृष्टिकोण में बदलावः आधुनिकता और अत्याधुनिकता

समाजशास्त्री हमें बताते हैं कि पिछले 40 वर्षों में, तथा हाल के दशक में, हमारी सभ्यता अथवा संसार का दृष्टिकोण वैश्विक तौर पर लगातार बदल रहा है अथवा "आधुनिक" से "अत्याधुनिक" विचारधाारा की ओर बढ़ गया है। हममें से अधिक लोग आधुनिक संसार में बढ़े हैं। हमारे किशोर और बच्चे "अत्याधुनिक" जागतिक दृष्टिकोण में जी रहे हैं।

आधुनिकता

आधुनिकता का आरम्भ ज्ञान के प्रकाश में हुआ। इसके पीछे विज्ञान का नियम था। ऐसा समझा गया कि विज्ञान और बौद्धिक एकता के द्वारा

संसार की समस्याओं का हल निकल आएगा। सत्य उसका उद्देश्य था। सत्य स्वयं-साक्षी था। सारी बातें स्पष्ट थीं। आधुनिकता के नीचे एकलवाद और आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति थी।

अत्याधुनिकता

तुलनात्मकता न कि तर्क इसका नियम था। *"कोई तथ्य नहीं, केवल अनुवाद"* (फ्रैड्रिक नेत्जशे)। चरित्र एक संबंधात्मक बात थी आप अपनी सुविधा के अनुसार जीने के लिए अपने चरित्र के मानक निर्धारित कर सकते हैं। आप अपनी बात कहने के लिए स्वतन्त्र हैं और कोई आपको नहीं कह सकता है कि आप गलत हैं। व्यक्तिगत अनुभव साम्राज्यवाद की शक्ति और सत्य के ऊपर होता था। जब सत्य के साथ समझौता किया जाता है, तब सहनशक्ति एक मार्ग होता है। परमेश्वर वैसा ही है जैसा आप उसे बनाना चाहते हैं।

हमारे किशोर और बच्चे एक चुनौतीपूर्ण संसार में बढ़ रहे हैं। उनके समाने बहुत प्रकार के विकल्प हैं जिसमें से उन्हें चुनना है, यहाँ तक कि जीवन के बहुत महत्वपूर्ण विषयों में से विश्वास, मूल्य और जीवनशैली।

> जिस संसार में हमारे किशोर और बच्चे बढ़ रहे हैं जिस संसार में अभी हम जी रहे हैं-वह उस संसार से बहुत भिन्न है जिसमें हम बढ़े हैं। किशोर और हम इस नए संसार के स्थानिक निवासी हैं, जिसमें वे बढ़े हैं! हम इस नए संसार में यात्री है।

2
मसीही संसार में बदलाव की हवा बह रही है

हमारे चर्च के तरीके में बदलाव

हमने मसीही संसार में बहुत से बदलाव देखे हैं। हम चर्च की सभाओं, जो टूटे हुए शीशों के अन्दर होती है, उनसे भव्य इमारतों, वातानुकूलित ऑडोटोरियम, कन्वेंशन केन्द्रों में चले गए हैं। उन गानों से जिन्हें हम गाते थे, अब कोरस, स्तुति-आराधना के गीत गाते हैं। हम गानों की पुस्तकों को छोड़कर अब कोरस के पन्नों अथवा औवर-हैड प्रोजेक्टर या एल. सी.डी. की ओर बढ़ गए हैं जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों को हम देख सकते हैं। सभाओं में ड्रामा/नाटकों/संगीत से निकलकर हम वीडियो और लघु फिल्मों की ओर बढ़ गए हैं।

सन्देश को प्रचार करने के तरीके में बदलाव

सकारात्मक रूप से, हमने परमेश्वर के वचन की बढ़ती हुई समझ को देखा है। 1400 सदी से मार्टिन लूथर के पुनः निर्माण के समय से हम बहुत दूर निकल आए हैं, विशेषकर पिछले 50 वर्षों में। परमेश्वर का वचन जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी बनाया जा रहा है। फिर भी पूरे संसार में मंच पर भयंकर बातें हो रही हैं। पास्टर और प्रचारक बड़ी भीड़ को आकर्षित करने के लिए परमेश्वर के शुद्ध वचन को प्रचार करने के बजाय वे लोगों को पसन्द आने वाली बातों का प्रचार करते हैं जो अत्यआधुनिकता के तत्वज्ञान से परिपूर्ण है और रविवार की आराधना के तत्वज्ञान से परिपूर्ण है और रविवार की आराधना के समान ही है। ऐसे मंचों से प्रचार किया गया वचन दोधारी तलवार नहीं रह गया, एक हथौड़ा अथवा आग नहीं है परन्तु प्राणों को सहलाने वाला और आरामदायक बिस्तर के समान है जहाँ लोग लेट जाते हैं। वे पाप का सामना करने और लोगों को पाप का अंगीकार कराने के लिए मनाकर देते हैं। वे स्वर्ग या नरक की वास्ताविकता पर बात करना नहीं चाहते हैं। वे इस प्रकार के

सन्देशों का प्रचार नहीं करेंगे कि कहीं उनके सदस्यों की संख्या कम न हो जाए।

सन्देश को प्रस्तुत करने के तरीके में बदलाव

इस सूचना और प्रसारण के युग में जिसमें हम रह रहे हैं, दो बातें ऐसी हैं जो सहस्र वर्षों की पीढ़ियों और सामान्य लोगों को प्रकट करती हैं।

- वे केवल सुनना ही नहीं चाहते हैं वे चाहते हैं कि उनकी सारी इन्द्रियाँ शामिल हों। वे उपदेश को सुनना नहीं चाहते बल्कि ऐसा अनुभव सुनना चाहते हैं जिससे जीवन परिवर्तित हो।
- परिणामस्वरूप, सूचना की वृद्धि के कारण हम ध्यान को एकाग्र करने की कमी को देखते हैं।

सकारात्मक रूप से हम बढ़ती हुई कलीसियाओं और प्रचारकों को समय के अनुसार सच्चाइयों का प्रचार करते देखते है जिनमें सारी इन्द्रियाँ सलंग्न रहती हैं। तकनीक और सृजनात्मकता इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सब कुछ ठीक है। तौभी भी दूसरी ओर, ऐसा प्रतीत होता है कि सन्देश को सृजनात्मक रूप से प्रचार करने का तरीका इतना बदल गया है कि हमने "पवित्रात्मा की सामर्थ" परमेश्वर के द्वारा नियुक्त की गई चमत्कारों, चिन्हों का तरीका–अलौकिकता का प्रकटीकरण आदि प्राचीन चिन्हों को ही खो दिया है। हम सभा का समापन प्राणों की सन्तुष्टि के लिए करते हैं जिसका आनन्द उठाने के लिए हजारों लोग आते हैं। परन्तु हम उन्हें पवित्रात्मा की अलौकिक सामर्थ से वंचित रखते हैं जो वास्तव में बदलती है, चंगा करती है और छुटकारा दिलाती है। हम अपने मंचों को कार्यक्रम प्रबन्धकों, मनोरंजकों, कहानियों के गढ़ने वालों, नाटक और प्रदर्शन करनेवालों से भरते हैं न कि अभिषिक्त प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, पास्टरों, शिक्षकों और प्रचारकों से।

हमने मसीही संसार में बहुत से **बदलाव** देखें हैं–हमारे **चर्च के तरीके में बदलाव**, सन्देश को करने के तरीके में बदलाव और **सन्देश** को प्रस्तुत करने के तरीके में बदलाव।

3
कौन से प्राचीन चिन्ह हैं?

जो सीमा तेरे पुरखाओं ने बाँधी हो, उस पुरानी सीमा को न बढ़ाना (नीतिवचन 22:28)।

पुरानी सीमाओं को न बढ़ाना, और न अनाथों के खेत में घुसना (नीतिवचन 23:10)।

जॉन गिल्स के सम्पूर्ण बाइबल व्याखान के अनुसार प्राचीन "चिन्हों" अथवा "सीमओं" (संज्ञा) जिनके द्वारा भूमि, सम्पत्ति और मीरास आदि निर्धारित की जाती और पृथक की जाती थी, पूर्वजों के द्वारा उनके पड़ौसियों के साथ समझौते के अनुसार निर्धारित की जाती थी। जिन्हें हटाना कानून के विरोध में था, और जो ऐसा करते थे उनके ऊपर श्राप बोला जाता था, और पुराने समय में इसे जघन्य अपराध माना जाता था; रोमवासियों में यह बात इतनी पवित्र वस्तु मानी जाती थी कि वे उन सीमाओं के ऊपर अपनी देवियों को स्थापित करते थे और वे उनके नाम से उन सीमाओं को पुकारते थे।

जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है, उसका जो भाग तुझे मिलेगा, उसमें किसी की सीमा जिसे प्राचीन लोगों ने ठहराया हो न हटाना (व्यवस्थाविवरण 19:14)।

'शापित हो वह जो किसी दूसरे की सीमा को हटाए'। तब सब लोग कहें, 'आमीन्'! (व्यवस्थाविवरण 27:17)।

यहूदा के हाकिम उनके समान हुए हैं जो सीमा बढ़ा लेते हैं; मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल के समान उण्डेलूँगा (होशे 5:10)।

अगुवे प्राचीन चिन्हों को हटाने के दोषी पाए गए और वे अपने ऊपर परमेश्वर का दण्ड लाए। यद्यपि हम "प्राचीन चिन्हों" और वचन के पदों

को उद्धत किया गया है, वे सम्पत्ति की वास्तविक सीमाएं हैं, परन्तु मैं इन्हें आत्मिक बातों में परिवर्तित करके इस पुस्तक की विषयवस्तु बनाना चाहता हूँ।

प्राचीन चिन्ह जो पुरानी पीढ़ियों के द्वारा निर्धारित की गई है वे निम्न बातों को प्रकट करती हैं:

- वे क्षेत्र जिनमें हम चलने के लिए स्वतन्त्र हैं और वे क्षेत्र जिनमें हम नहीं चल सकते।
- धोखे से आप वर्जित क्षेत्र में चले जाएंगे।

इस बदलते हुए संसार में हमें यह स्मरण रखना चाहिए: कि कुछ ऐसे प्राचीन चिन्ह हैं जिन्हें हमें नहीं हटाना चाहिए। कुछ पवित्र सीमाऐ हैं जिन्हें हमें नहीं लाँघना चाहिए। कुछ ईश्वरीय रीति-रिवाज हैं जिन्हें हमें नहीं छोड़ना चाहिए।

ईश्वरीय रीति-रिवाजों को हमें नहीं छोड़ना चाहिए

यद्यपि यह सत्य है कि कुछ ऐसे रीति-रिवाज हैं जिन्हें मनुष्यों ने बनाया है और वे बेकार हैं जिन्हें हमें तोड़ना चाहिए, परन्तु कुछ ईश्वरीय, बाइबल के रीति-रिवाज हैं जिन्हें हमें स्थिर रखना चाहिए। ये बहुत महत्वपूर्ण है।

मनुष्यों के द्वारा बनाए गए रीति-रिवाज

हम मनुष्यों के द्वारा बनाए गए उन रीति-रिवाजों को तोड़ने के लिए स्वतन्त्र हैं जो हमें परमेश्वर के साथ चलने में कोई लाभ नहीं पहुँचाते। मनुष्यों द्वारा बनाए गए रीति रिवाज हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन का खण्डन करते हैं और हमें धोखा और बन्धन में ले जाते हैं।

इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो (मरकुस 7:13)।

चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अपना अहेर न बना ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार तो हैं, पर मसीह के अनुसार नहीं (कुलुस्सियों 2:8)।

ईश्वरीय रीति-रिवाज

फिर भी हमें यह समझना चाहिए कि कुछ ईश्वरीय रीति-रिवाज हैं जिन्हें हमें स्थिर रखना चाहिए।

हे भाइयो मैं तुम्हें सराहता हूँ कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो; और जो परम्पराएँ मैंने तुम्हें सौंपी हैं, उनका पालन करते हो (1 कुरिन्थियों 11:2)।

इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)।

हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा उसने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)।

उपयुक्त

यह समझने के बाद कि कुछ प्राचीन चिन्ह हैं जिन्हें हमें स्थिर रखना चाहिए, पवित्र सीमाऐं है जिन्हें लाँघना नहीं चाहिए और ईश्वरीय रीति-रिवाज हैं जिन्हें हमें नहीं छोड़ना चाहिए, अब हम एक बहुत महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचे हैं जो उपयुक्त है।

हम किस प्रकार बदलती हुई संस्कृति में, एक नए संसार में उपयुक्त हो सकते हैं और फिर भी प्राचीन चिन्हों को स्थिर रख सकते हैं?

जवान मसीही होने के नाते हम नए संसार में संस्कृति के साथ संघर्ष करते हैं। यह बात सच है कि हम एक भिन्न संसार और भिन्न दृष्टिकोण और संस्कृति में रह रहे हैं और यह नहीं जानते कि ऐसे वचन किस प्रकार लागू करें:

इसका क्या अर्थ है कि संसार में हैं फिर भी "संसार के नहीं हैं" (यूहन्ना 17:14-18)? हम कैसे संसार में उपयुक्त रह सकते हैं और फिर भी संसार के सदृश्य न बनें (रोमियों 12:1,2)? हम संसार से कैसे जुड़े रह सकते हैं और तौभी इसके साथ मित्रता न करें, (याकूब 4:4)? हम कैसे प्रतिदिन के जीवन का आनन्द ले सकते हैं जबकि हम अपने आपको इस से सुरक्षित रखकर इससे प्रेम न करें (1 यूहन्ना 2:15-17)? ये ऐसी बातें हैं जिनसे हम संघर्ष करते हैं।

हम जानते हैं कि हम संसार से बाहर नहीं रह सकते क्योंकि हमें संसार में भेजा गया है। हम इस नए संसार की संस्कृति में क्या करते हैं जिसमें हम पाए जाते हैं? हम संसार के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं? हम अपने किशोरों और बच्चों को क्या सिखाते हैं जो इस नए संसार में जी रहे हैं, जिनकी संस्कृति बदल रही है और उनकी संस्कृति से हम अधिक वाकिफ नहीं हैं?

- यदि हम इस नए संसार की संस्कृति से अपने आप को अलग करें तो हम इसे प्रभावित, उन्नत अथवा परिवर्तित नहीं कर पाएंगे।
- यदि हम पूर्णरुप से इस नए संसार की संस्कृति को पहन लें तो हम इस संसार की गलतियों को सुधार नहीं पाएंगे।
- हमें इस बदलते हुए नए संसार की संस्कृति को खोजने, समझने और लागू करने की आवश्यकता है ताकि हम समयानुसार सत्यों और सिद्धान्तों को स्थापित कर सकें।

कोई भी संस्कृति अपने आप में न तो अच्छी और न ही बुरी है। परन्तु प्रत्येक संस्कृति में अच्छे और बुरे दोनों तत्व पाए जाते हैं जिन्हें ठीक से समझने और बुद्धिमानी से लागू करने की आवश्यकता है। पौलुस यहाँ परमेश्वर के हृदय की बातों को बताते हुए कहता है:

क्योंकि सब से स्वतन्त्र होने पर भी मैंने अपने आप को सब का दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ। मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों

को खींच लाऊँ। जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ। व्यवस्थाहीनों के लिये मैं-जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ-व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ। मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊँ। मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ। मैं यह सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ (1 कुरिन्थियों 9:19-23)।

1 कुरिन्थियों 9 से उद्धत वचन शायद बहुत महत्वपूर्ण भाग है जो हमें बताता है कि हम कैसे सुनने वालों के लिए उपयुक्त बन सकते हैं-सबके लिए सब कुछ बनना। उनकी तरह बनना जिनकी हम सेवा कर रहे हैं। यदि पौलुस को अपने समय में यह आवश्यक लगा तो मुझे निश्चय है कि हमें भी ऐसा ही करने की आवश्यकता है!

तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो। जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ कि वे उद्धार पाएँ (1 कुरिन्थियों 10:32,33)।

1 कुरिन्थियों 10:32,33 अवश्य ही 1 कुरिन्थियों 9:19-23 के परिपेक्ष में समझना चाहिए जिसकी चर्चा पौलुस उपर्युक्त भाग में कर रहा था। पौलुस का तर्क सब मनुष्यों को सब बातों में प्रसन्न करना आत्म लाभ के लिए नहीं था, न ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना था, परन्तु मसीही विश्वास में लाना था।

"संबद्धता का अर्थ है कि समय और संस्कृति के अनुसार बात कहना। हमें संस्कृति और समय के अनुसार बात करना सीखना चाहिए"(रिगी जॉयनर, फैमिली वाइज़ की संस्थापक)।

संसार बदल रहा है। जैसा कल था वैसा आज नहीं हो सकता है! हमें नए संसार के साथ चलना है। हमें नए संसार की संस्कृति के शब्दों

और चिन्हों का प्रयोग करके इसके सम्मुख अनन्त सत्यों को प्रकट करना है। तौभी ऐसा करने में खतरे हैं जिन्हें हमें समझना है। हम यूँ ही संस्कृति में से बातों को लेकर समयानुकूल सत्यों को प्रकट नहीं कर सकते हैं। हम नए संसार की संस्कृति को लागू करने, और स्थापित करने के लिए प्राचीन चिन्हों के साथ समझौता नहीं कर सकते हैं।

हमें स्मरण रखना चाहिए। **ऐसे प्राचीन चिन्ह हैं जिन्हें हमें नहीं हटाना चाहिए**। ऐसी **पवित्र सीमाएं हैं जिन्हें हमें नहीं लाँघना चाहिए**। ऐसे **ईश्वरीय रीति-रिवाज हैं जिन्हें हमें नहीं छोड़ना चाहिए।**

4
हमारे प्राचीन चिन्ह

मैं कुछ ऐसी परिवर्तन की हवाओं की चर्चा करना चाहता हूँ जो हमारे जीवन के बहुत से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बह रहीं हैं और हमें इन क्षेत्रों में प्राचीन चिन्हों के विषय में याद दिलाती हैं:

- व्यक्तिगत जीवन और चरित्र
- विवाह और परिवार
- कार्यस्थल
- कलीसिया का जीवन और
- सेवा

कुछ ऐसी हवायें चल रहीं हैं जिनमें हमें **समायोजित और स्वीकारना** होगा ताकि हवा के साथ बह सकें कि कहीं ऐसा न हो कि इस वर्तमान नए संसार से अलग और पीछे न छूट जाएं। तब, कुछ ऐसी बदलाव की हवाएं चल रही हैं जो हमें पवित्र सीमाओं को पार कराने में लगी हैं ताकि हम ईश्वरीय रीति-रिवाजों को भूल जाएं। हमें इन परिवर्तन की हवाओं को प्राचीन चिन्हों का प्रयोग करके **तूफान के बीच** स्थिर रहना सीखना चाहिए।

इस पुस्तक में मेरा इरादा बदलाव के सारे क्षेत्रों को सम्बोधित करना नहीं है। मेरा इरादा है कि मैं पर्याप्त ***बुद्धि और समझ को प्रस्तुत करूँ ताकि हम परिवर्तन की हवाओं को उपयुक्त प्रत्युत्तर देना जानें,*** जो बह रही हैं अथवा आनेवाले दिनों में हमारे ऊपर आ सकती हैं। मैं चाहता हूँ कि हम प्राचीन चिन्हों की सीमा में स्थिर रहें-पवित्र सीमाएं और ईश्वरीय रीति-रिवाजों को पार न करें।

मेरी इच्छा मात्र यह नहीं है कि हमें केवल परिवर्तन को ठीक से प्रत्युत्तर देने की योग्यता मिले, परन्तु हमें ***इन प्राचीन चिन्हों को अपने***

संसार में ले जाने की चुनौती भी मिले- ताकि हम अपने संसार के उन क्षेत्रों को भी बदल सकें जो परिवर्तन की हवा से बिखर गए हैं। आप कल्पना कीजिए कि एक ऐसी प्रजा जो प्राचीन चिन्हों के साथ पवित्र सीमाओं के साथ और ईश्वरीय रीति-रिवाजों के साथ व्यापार, सरकार, शिक्षा, खेलकूद, मीडिया, मनोरंजन और कला, सारी जगहों पर जीती है। तब हम सच में अपने संसार में ***नमक और ज्योति*** की तरह रहेंगे।

मेरा साधारण आह्वान यहाँ यह है कि आप बाइबल के साथ रहें। **बाइबल ही हमारा प्राचीन चिन्ह है!**

सत्य अधूरा नहीं होता है। सत्य सम्पूर्ण होता है। परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)। परमेश्वर के निर्देश हमारे लिए अधूरे नहीं है। वे सम्पूर्ण हैं। हम यह नहीं खोज करते की परमेश्वर का कहने का क्या अर्थ है। परमेश्वर ने वही कहा है जिसे वह चाहता है और जो कुछ वह चाहता है वही कहा है। हम उसी का अनुसरण करते हैं जो उसने कहा है।

व्यक्तिगत जीवन और चरित्र हेतु प्राचीन चिन्ह

पवित्रता

आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो (1पतरस1:14-15)।

सब से मेल-मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा (इब्रानियों 12:14)।

पवित्र होने का अर्थ है "परमेश्वर के लिए अलग होना।" इसका अर्थ है कि मैं परमेश्वर का हूँ। अत: जो कुछ मैं कहता हूँ वह सब कुछ परमेश्वर को प्रकट करे, और वह ईश्वरीय हो और ईश्वरत्व को प्रकट करे।

हमें उन सब को इसी स्तर से जाँचना चाहिए जो हम कहते, करते, पहनते आदि व्यवहार करते हैं। तौभी हमारी पवित्रता के स्तरों को हमें उनसे अलग नहीं करना चाहिए जो इस स्तर तक नहीं पहुँचे हैं। हमें उनसे अपने आपको मिलाना चाहिए लेकिन उनसे प्रभावित नहीं होना चाहिए।

यदि रखिए कि यीशु को "कर वसूल करने वालों और पापियों" के साथ बैठने और खाने-पीने में कोई एतराज नहीं था (मत्ती 9:11)। इसका अर्थ है कि मैं उनके समान किसी हद तक कपड़े पहन सकता हूँ, उनकी तरह सूँघ सकता हूँ, उनकी तरह देख सकता हूँ और तौभी परमेश्वर के सम्मुख अपनी पवित्रता के स्तर को नहीं खो सकता हूँ।

पवित्रता एक प्राचीन चिन्ह है चाहे हम संसार के किसी भी भाग में क्यों न रहते हों और किसी भी संस्कृति से जुड़े हुए न हों।

पवित्रता के लिए परमेश्वर का स्तर सम्पूर्ण है। वे परमेश्वर की सभी सन्तानों के लिए एक जैसे ही हैं चाहे हम संसार के किसी भी भाग में क्यों न रहते हों। और किसी भी संस्कृति से जुड़े हुए क्यों न हों। विश्वासी होने के नाते हम अपने आप अपने आचरण के स्तरों को नहीं बना सकते हैं। वे हमारे लिए परमेश्वर के वचन में पहले से ही परिभाषित किए गए हैं। हमें आचरण के सिद्धान्त जो अत्यआधुनिकता के तत्वज्ञान के अनुसार हैं, जो कलीसिया में आ गए हैं, उनसे सतर्क रहना चाहिए, विशेषकर ऐसे लोगों से जो हमें यह सिखाते हैं कि हम अपनी पवित्रता के स्तर स्वयं बना सकते हैं और पवित्रता के स्तर एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता तक बदलते रहते हैं। ऐसा नहीं हो सकता है। बाइबल संसार के किसी भी भाग में एक जैसी ही है और परमेश्वर अपनी सारी सन्तानों से एक जैसी ही बातें कहता है।

महिलाएं विशेषकर, कृपया स्मरण रखें कि जिस प्रकार आप कपड़े पहनती हैं आपको दो महत्वपूर्ण बातों को प्रकट करना चाहिए-सुहावनापन और ईश्वरत्व।

वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है (1तीमुथियुस 2:9,10)।

मैं जानता हूँ कि कुछ लोग तर्क दे सकते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में सुहावनापन भिन्न-भिन्न होता है। वे कहेंगे कि जिस बात को एक संस्कृति अच्छा नहीं कहती है, वही बात दूसरी संस्कृति में अच्छी समझी जाती है। इसके प्रति मेरे दो उत्तर होंगे। पहला, वचन स्त्रियों को बताता है कि वे सुन्दर बनें और "हृदय में छिपे व्यक्तित्व" को प्रकट करें, जो परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य है (1 पतरस 3:4)। अत: संस्कृति से परे यही एक विश्वासी स्त्री का उद्देश्य होना चाहिए। दूसरा, आप जिस संस्कृति में यह रह रही हैं उसी के सन्दर्भ में सुहावनी बनें।

ईमानदारी

जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है (नीतिवचन 10:9)।

हम अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में ईमानदारी और खराईपन से समझौता नहीं कर सकते हैं। यह ऐसी सीमा है जिसे हम नहीं हटाते-चाहे कितनी भी गम्भीर परिस्थिति क्यों न हो।

कठिन परिश्रम

जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं (नीतिवचन 10:4)।

कभी-कभी हम ऐसे लोगों का पीछा करते हैं जो तुरन्त सफलता को प्राप्त करते हैं। मार्क ज़ुकरबर्ग, एक 23 वर्षीय जवान जो हावार्ड से निकाला गया था वह फेसबुक डॉट कॉम का संस्थापक बना, वह

बेबसाइट के क्षेत्र में द्वितीय सितारा माना जाता है, इस पुस्तक को लिखते समय तक 15 करोड़ का स्वामी है। केवल एक अच्छे विचार के साथ केवल चार वर्षों में उसने तुरन्त सफलता प्राप्त की!

इस प्रकार की तुरन्त सफलताओं की कहानियों को देखकर और सुनकर हम भी कभी-कभी अपने आपको उनकी तरह बनाकर आसान तरीका ढूँढ़ने लगते हैं। आज के समय में कठिन परिश्रम का कोई महत्व नहीं प्रतीत होता है। परन्तु "प्राचीन चिन्ह" कहता है कि यदि आपके हाथ आलसी हैं तो आप निर्धन रह जाएंगे। केवल परिश्रमी लोग ही सफलता को देखते हैं।

क्या आप जानते हैं कि यह कहा जाता है कि अज़ीम प्रेमजी, विप्रो के अध्क्षय एक सप्ताह में औसतन 80 घण्टे काम करते हैं? जब वह किसी को अपनी टीम में शमिल करने का विचार करते हैं तो वे एक प्रश्न पूछते हैं, "आप एक सप्ताह में कितने घण्टे काम करते हैं?" कोई भी व्यक्ति जो अध्यक्ष के साथ प्रत्यक्ष रूप से काम करना चाहता है उसे 60-70 घण्टे प्रति सप्ताह काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। मैं यह उत्साहित नहीं कर रहा हूँ कि कोई आवश्यकता से अधिक अपने आपको काम के बोझ से दबा ले। परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि हम यह समझें कि सफलता सस्ती नहीं होती है!

प्राथमिकताएं

हमारी प्राथमिकताएं लगातार चुनौतीपूर्ण होती जा रही है एक ऐसे संसार में जहाँ यह विचार है कि प्रत्येक वस्तु अधूरी और अनुवाद पर निर्भर है।

मरकुस 12:29-31 और मत्ती 6:33 एक ही हैं और ये हमारे जीवन के लिए प्राचीन चिन्ह हैं जिन्हें हमें अपने जीवन में स्थिर रखना है।

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: 'हे इस्राएल सुन! प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है, और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना (मरकुस 12:29-30)।

इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी (मत्ती 6:33)।

हम विश्वासियों के लिए परमेश्वर से प्रेम और उसके राज्य की प्राथमिकता सूची में सर्वोच्च स्थान पर है बल्कि यह हमारे व्यक्तिगत आराम और व्यक्तिगत उद्देश्यों से भी बढ़कर है।

ऐसे संसार में जहाँ मनुष्य का मूल्य उसकी सम्पत्ति के द्वारा आंका जाता है हमें समझना है कि हम कौन हैं यह उससे अधिक महत्वपूर्ण है कि हमारे पास क्या है!

चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो; क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता (लूका 12:15)।

साक्षी

हमें अपनी साक्षियों को सदैव स्थिर रखना चाहिए। हमारी गवाहियाँ हमारा जीवन है- हमारे काम, व्यवहार, आचरण-वे हमारे आस-पास के लोगों से बोलते हैं यद्यपि हम एक भी शब्द उनसे नहीं बोलते हैं हम ऐसा प्रयास करते हैं कि एक ऐसी गवाही बना कर रखें जो निन्दा से ऊपर हों और ऐसा जीवन जीएं जिसमें कोई दाग न पा सके। हम जिस प्रकार का जीवन जीते हैं वह उसकी प्रशंसा प्रकट करे जिसका हम अनुसरण करते हैं (1पतरस 2:9)।

विवाह और परिवार के प्राचीन चिन्ह

विवाह

विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा (इब्रानियों 13:4)।

विश्वासी होने के नाते हम समझते हैं कि विवाह एक ऐसी संस्था है जिसे परमेश्वर ने ठहराया है। यह जीवन भर की वाचा है। यह प्राचीन चिन्ह है जिसे हम नहीं हटाते। वे जो डेटिंग पर हैं, स्मरण रखें जब तक आप विवाह नहीं करते तब तक आप विवाहित नहीं हैं। अत: जब तक विवाह नहीं करते तब तक विवाहितपन के लाभ नहीं उठा सकते हैं। उनके लिए जो विवाहित हैं, याद रखें कि आपका विवाह दो और केवल दो के लिए ही निश्चित किया गया है। आन्तरिक परिधि बनाए रखें।

परिवार

परिवार परमेश्वर ने बनाया है। जब आप अपने परिवार की सेवा करते हैं तो आप परमेश्वर द्वारा दी गई सेवा को पूरा करते हैं ठीक उसी प्रकार जो परमेश्वर द्वारा ठहराई गई सेवाऐं हैं (प्रचार करना, भविष्यवाणी करना अथवा चमत्कार करना)। अत: एक व्यक्ति के द्वारा अपने परिवार की सेवा करना एक प्राचीन चिन्ह है जिससे हम हाथ नहीं धोते। हम अपने परिवार में निवेश करने की प्राथमिकता देते हैं।

जबकि हम एक बड़े समाज में विश्वास करते हैं जिसके हम सब विश्वासी एक भाग हैं (स्थानीय कलीसिया), इसे भी परमेश्वर ने ठहराया है, अत: हमें सतर्क रहना चाहिए कि कहाँ-कहाँ रेखा खींची गई है। हम अपने परिवार को अनुमति नहीं देंगे कि वह चर्च समाज में लोप जाए।

माता-पिता का आदर करना

हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज; क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट और तेरे गले के लिये कन्ठ माला होगी (नीतिवचन 1:8,9)।

अपने माता-पिता का आदर, सम्मान और सेवा करना पुरानी बात लग सकती है। विश्वासी होने के नाते, हमें परमेश्वर के वचन में आज्ञा दी गई है कि हम अपने माता-पिता का आदर करें (इफिसियों 6:1-3)। यह एक ईश्वरीय रीति है जिसे हमें तुच्छ नहीं जानना चाहिए।

कार्यस्थल के लिए प्राचीन चिन्ह

वही प्राचीन चिन्ह जिनकी चर्चा हमने व्यक्तिगत जीवन और चरित्र में की है वे कार्यस्थल पर भी लागू होते हैं। इन प्राचीन चिन्हों को अपने व्यवसायिक स्थानों पर ले जाइए। नए संसार की संस्कृति को इन प्राचीन चिन्हों को मिटाने की अनुमति मत दीजिए।

स्वतन्त्रता

आज हम प्रत्येक प्रकार का तरीकों और प्रयासों को प्रयोग करते हैं ताकि कर्मचारी यह अनुभव करे कि वह उस संस्था का भाग है- न कि केवल कर्मचारी है। हम चाहते हैं कि लोग स्वतन्त्र हों और फिर भी काम करें। लेकिन बहुत बार कर्मचारी इस स्वतन्त्रता को गलत समझ कर इसका अर्थ अनुशासन की कमी से लगाते हैं।

स्वतन्त्रता अनुशासन की कमी नहीं है। स्वतन्त्रता जवाबदेही की कमी नहीं है। यह ऐसा नहीं है कि आप फैसला करें कि कब कार्यालय आना है और कब वापस जाना है, आप अपना वेतन कितना रखते हैं, आप व्यक्तिगत खर्चों को कितना करते हैं और कम्पनी को बिल जमा कर दें, यह आपका फैसला नहीं है कि आप किस होटल में रुकना चाहते हैं-इनमें से कोई भी कार्यस्थल पर स्वतन्त्रता को प्रकट नहीं करती है। कोई भी अच्छी संस्था सीमाएं और मार्गदर्शिका इन क्षेत्रों के लिए

रखतीं हैं नहीं तो बहुत गड़बड़ी होगी। सच्ची स्वतन्त्रता कार्य के स्थान पर यह है कि आप को पर्याप्त स्वतन्त्रता मिले कि अपनी सभी क्षमताओं को प्रयोग करके आप संस्था के लिए बड़े मूल्य को अर्जित कर सकें, वह भी बिना अनावश्यक दबाव अथवा हस्तक्षेप के। यह स्वतन्त्रता उस सौभाग्य के लिए है कि आप सृजनात्मक विचारों को बाँट सकें, लक्ष्य निर्धारित करें और उन लक्ष्यों को पूरा करने के विषय में प्रयास करें।

और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु की जानकर सच्चे हृदय से करो (इफिसियों 6:7)।

सापेक्षिक और परिस्थितियों पर आधारित गुण

व्यापारिक और व्यक्तिगत मूल्य कार्यस्थल पर चुनौतीपूर्ण हो गए हैं, उस अत्यआधुनिकता के दृष्टिकोण के कारण जो तुलनात्मकता और आचरण में विश्वास करता है। सही और गलत, काला और सफेद छाया में कहीं खो गए हैं। मूल्य, आचरण और ईमानदारी का समझौता मात्र लाभ सही सम्बन्धों और तुरन्त सफलताओं के लिए कर लिया गया है।

प्राचीन चिन्ह अभी भी इस प्रकार है:

जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है (नीतिवचन 10:9)।

व्यवसायियों, हमें अपने संसार को अवश्य प्रभावित करना है न कि केवल हम इससे प्रभावित हो जाएं। मैं आपको चुनौती देना चाहता हूँ: **कुछ भिन्न करें, केवल रोटी ही न कमाऐं!**

कलीसियाई जीवन के लिए प्राचीन चिन्ह

संगीत

समकालीन संगीत बुरा नहीं है। यह अच्छा है कि संगीत के साथ भक्तिपूर्ण गीत हों जिससे नई पीढ़ी जुड़ी हुई है। फिर भी हमें ऐसे गीतों

से सावधान रहना चाहिए जो संगीत परमेश्वर को अनुभव करने से हमें वंचित करते हैं।

इसलिये अब तुम यह गीत लिख लो, और तू इसे इस्राएलियों को सिखाकर कंठस्थ करा देना, इसलिये कि यह गीत उनके विरुद्ध मेरा साक्षी ठहरे (व्यवस्थाविवरण 31:19)।

गीतों को लिखवाने का परमेश्वर का एक कारण यह भी था कि वह अपने लोगों को सिखा सके और अपना वचन उनके मुँह में डाल सके ताकि वे लगातार उसे स्मरण करें और जानें कि उसने उनके लिए क्या किया है। हमें समकालीन गीतों को इन प्राचीन चिन्हों के साथ जाँचना चाहिए। क्या एक गीत परमेश्वर के उद्देश को पूरा होने के लिए सहायक है?

हमें बहुत पुराने भजनों को भी नहीं भूलना चाहिए जो विश्वास के भजन हैं। ये भजन आत्मिक ज्ञान से भरे हैं जो विश्वास को प्रकट करते हैं।

और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो (इफिसियों 5:19)।

हमें प्रत्येक की आवश्यकता है–भजन, गीत और सुसमाचार गीत–प्रभु के प्रति अपने संगीत को प्रस्तुत करने के लिए!

अनुशासन

आज बहुत से पास्टर चरवाहे की लाठी का प्रयोग करने से डरते हैं। प्रत्येक चरवाहा न केवल अपनी भेड़ों को हरी चराईयों और सुखदाई जल के पास ले जाता है बल्कि उसे लाठी की आवश्यकता होती है ताकि अपनी भेड़ों को मार्गदर्शन और सुरक्षा दे सके।

चिकित्सा के क्षेत्र में एक क्रिया है जिसे हम पलियाटिव केयर (विशेष सुरक्षा) कहते हैं जो उन रोगियों के लिए है जो लाइलाज बीमारियों से ग्रसित हैं। इसका उद्देश्य है कि उनके अन्तिम दिनों को अधिक से अधिक आरामदायक बनाया जा सके। यह उनके लिए बहुत लाभदायक है जो शारीरिक रुप से बीमार हैं। तौभी कलीसिया ऐसे लोगों को इस प्रकार का आराम नहीं दे सकती है जो पाप में जी रहे हैं और परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित हैं (इब्रानियों 12:15)। इससे कोई लाभ नहीं होगा कि हम उन्हें इस पृथ्वी पर आराम दें और उनको नरक में अपनी नियति व्यतीत करने के लिए उनकी मदद करें। मैं इसकी अपेक्षा चाकू निकाल कर उनकी मदद करूँगा कि वे अपनी सीधी आँख अथवा सीधा हाथ काटने जैसी दुखदाई प्रक्रिया में से होकर गुजरें जो उन्हें पाप करने के लिए विवश करते हैं (मत्ती 5:29,30)। कलीसिया अपने पास्टर की मदद करे कि वह वास्तविक चरवाहा बने। उसे अनुमति दें कि वह अपनी छड़ी और लाठी का प्रयोग करे जिसके बिना वह अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन, सुधार और सुरक्षा नहीं कर पाएगा।

तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ, या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

हम अनुग्रह की बहुतायत में विश्वास करते हैं परन्तु हम भक्तिपूर्ण अनुशासन में भी विश्वास करते हैं। आइये अनुग्रह के नाम पर भक्तिपूर्ण अनुशासन का बलिदान न करें। न ही हमें अनुशासन पर इतना ज्यादा ध्यान देना चाहिये कि यही भूल जांए कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना हम यह कभी नहीं कर पाएंगे!

अगुवों के प्रति अधीनता

अत्यआधुनिक संसार में 'आदर', 'सम्मान', 'अधीनता' और 'आज्ञाकारिता' आदि शब्द बुरे समझे जाते हैं। यह आचरण कलीसिया में भी आ गया है।

यहाँ एक प्राचीन चिन्ह है:

अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभी नहीं (इब्रानियों 13:17)।

सेवा हेतु प्राचीन चिन्ह

वस्त्र

हम याजकों के वस्त्रों की ओर से सूट और साधारण वस्त्रों की ओर आ गए हैं जो पुलपिट पर पहने जाते हैं। केवल वस्त्रों के पहनावे से ही प्रचारकों का न्याय न करें। वे भेड़ियों के भेष में भेड़ हो सकते हैं। आवश्यक बात यह है कि उनका जीवन, चरित्र, उनके सन्देश की ईमानदारी और वह अभिषेक जो वे लाते हैं। सामान्य वस्त्रों में कोई गलती नहीं है जहाँ तक हम प्राचीन चिन्हों को अपनी सेवा में बरकरार रखते हैं।

ढंग

मैं उन बातों से चिन्तित हूँ जो आज मैं मसीही संसार में देखता हूँ। अपने ठण्डेपन और सामान्य गुण को प्रकट करने के प्रयास में प्रचारक और सेवक सेवा में निम्न प्रकार के स्तरों का प्रयोग करते हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि एक प्रचारक मंच पर खड़े होकर यह बताता है कि प्रति सप्ताह वह अपनी पत्नि के साथ कितनी बार यौनाचार करता है-ताकि उसकी मण्डली उसे एक सरल पास्टर माने। सरल और सीधेपन को प्रकट करने के प्रयास में हमने मंच की पवित्रता को खोकर उसे भद्दी भाषा, सस्ते मजाक और अन्य दूषित बातों में बदल डाला है।

एक व्यक्ति जिसने जब से सेवा आरम्भ की है, चार बार तलाक ले चुका है और अब वह पाँचवी शादी कर रहा है, वह लगातार एक

पास्टर और प्रचारक की तरह टेलीविजन पर प्रचार कर रहा है। हम क्यों इस बात को सहन करते रहते हैं?

वे लोग जो सेवा और आत्मिक अगुवेपन में हैं उनके लिए प्राचीन चिन्ह ये हैं:

यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो, वरन् कोमल हो, और न झगड़ालू, और न धन का लोभी हो, अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर का ही प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा? (1 तीमुथियुस 3:1-5)।

मसीही संसार में ऐसा प्रतीत होता है कि हम उन स्तरों को नजरअन्दाज कर रहे हैं जो परमेश्वर ने अपने सेवकों को दिए हैं। यह सत्य है कि सेवक मिट्टी के ही बने हैं परन्तु तौभी परमेश्वर ने जो स्तर हमारे लिए रखे हैं वह अपेक्षा करता है कि हम उन्हें मानें। प्राचीन चिन्ह हैं जिनका हम उल्लंघन नहीं कर सकते हैं।

सन्देश

प्रेरित पौलुस की ओर से एक निश्चित चेतावनी:

पौलुस ने कहा, "क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं"(2 कुरिन्थियों 2:17)।

परमेश्वर के वचन के साथ मोल-भाव करने का अर्थ है? इसका अर्थ है वचन में मिलावट करना, नैतिक अधूरेपन से (सम्पूर्णता के साथ

नहीं) मिश्रित करना, अत्यआधुनिकता का तत्वज्ञान, मानवता और अपने सुनने वालों के लिए "सुखद सन्देश" प्रस्तुत करना है। यह सारे संसार में होता हुआ प्रतीत होता है। ऐसा नहीं है कि कुछ प्रचारक बाइबल का प्रयोग नहीं कर रहे हैं और वचन को उद्धत नहीं कर रहे हैं। परन्तु नए संसार के योग्य बनने के प्रयास में कुछ प्रचारक परमेश्वर के वचन में मिलावट कर रहे हैं और ऐसी बातें सुनने वालों को बताते हैं जिन्हें वे सुनना पसन्द करते हैं!

तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे (2 तीमुथियुस 4:2-4)।

हम किसी भी सन्देश की वैधता उस सन्देश की तारीफ करने वाले लोगों की संख्या से नहीं कर सकते हैं। कोई भी अच्छा बोलने वाला भीड़ को जमा कर सकता है। सन्देश की वैधता को जाँचने का एक ही तरीका है कि उसे परमेश्वर के समझौता न करनेवाले वचन की कसौटी पर परखा जाए।

यीशु ने राज्य का सन्देश धीरे-धीरे नहीं दिया। उसका आवहन था: "प्रतिदिन अपना क्रूस उठाओ और मेरे पीछे हो लो।"

इस पर उसके चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। तब यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" (यूहन्ना 6:66,67)।

बहुत से लोगों ने यीशु को छोड़ दिया और वे बारह ही उसके साथ बचे, और यीशु ने उनसे पूछा क्या तुम भी चले जाना चाहते हो।

आपने सोचा होगा यीशु अपने सन्देश में असफल हुआ क्योंकि उसके सुनने वाले उसका सन्देश सुनकर चले गए। (आप एक सन्देश

को लोगों के नकारात्मक व्यवहार के आधार पर भी नहीं जाँच सकते हैं-क्या होगा यदि उन्हें सत्य न बताया जाए?) तौभी हम जानते हैं कि भीड़ उसे ढूँढ़ती हुई आई क्योंकि उसके वचन पिता के शुद्ध वचन थे और उसने पिता के काम किए।

अपने सन्देश को प्रचार करते समय हमें प्राचीन चिन्हों को बरकरार रखना चाहिए और परमेश्वर के वचन को बिना समझौता और बिना मिलावट के प्रचार करना चाहिए।

तरीके

सेवा के तरीके में प्राचीन चिन्ह यह है कि सुसमाचार का प्रचार चिन्ह, अद्भुत काम और चमत्कारों के साथ पवित्रात्मा की सामर्थ में किया जाए। यही यीशु ने किया और हमें भी यही करना सिखाया। सुसमाचारों में दृष्टातों की अपेक्षा यीशु के चमत्कारों का अधिक वर्णन है।

यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो। परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास न भी करो परन्तु उन कामों का तो विश्वास करो, ताकि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ (यूहन्ना 10:37, 38)।

पौलुस ने कहा:

मेरे वचन और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो (1 कुरिन्थियों 2:4,5)।

यही हमारा प्राचीन चिन्ह है और हमें तत्कालीन प्रचार को जाँचने के लिए यही पैमाना प्रयोग करना है। वार्तालाप की निपुणता और महान मल्टीमीडिया की प्रस्तुतिकरण को अनुमति न दे कि वह आपको मूर्ख बना जाए और समझें कि यही परमेश्वर के वचन की सेवा है। यीशु हमारा स्तर है। उसने कहा कि वचन के प्रचार के साथ चमत्कार और

अलौकिक चिन्ह चलने चाहिए। यही सर्वोत्तम परिवर्तन का अनुभव है जिसे हम उन लोगों को दे सकते हैं जो कलीसिया में आते हैं–जो अलौकिकता का सामना करने आते हैं!

यही वह दिशा है जिसमें हमें कलीसिया के रुप में आगे बढ़ना है। हमें वहीं जाना है।

यद्यपि तकनीकी और सृजनात्मक तरीकों का सुसमाचार का सत्य बताने के लिए प्रयोग करने में कोई गलत बात नहीं है। परन्तु मेरी चिन्ता यह है कि कहीं मार्ग में हम राज्य के उद्देश्य को खो न दें, और परमेश्वर में कोई गहराई न रखें, इसके बदले कहीं आज की चमकती हुई मार्केटिंग और चलती हुई सेल्समैनी न करने लगें कि बड़ी भीड़ को आकर्षित करें। हम वस्तुओं पर अधिक आधारित बनते जा रहे हैं बजाए विश्वास के सजृक और कर्त्ता के पीछे चलने के।

हमें सेवा में अपने उद्देश्य और तरीकों में दृढ़ता से धर्मी होना चाहिए।

हम किसी बात में ठोकर खाने पर कोई दोष न आए। परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं (2 कुरिन्थियों 6:3,4)।

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, आइए हम अपनी बुलाहट के प्रति सच्चे बने रहें–पवित्रात्मा की सामर्थ में वचन का प्रचार करें और अलौकिकता को प्रस्तुत करें। इसके अतिरिक्त हम अन्य जिन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं वे केवल लोगों के हृदय को जोड़ती हैं और उन्हें प्राचीन चिन्हों का विरोध नहीं करना चाहिए।

ऑल पीपुल्स चर्च के पास्टर्स और सेवकाई के अगुवे परमेश्वर के वचन को सम्पूर्णता, बिना समझौता, और परमेश्वर के अभिषेक की सामर्थ में प्रस्तुत करने हेतु समर्पित हैं। हम विश्वास करते हैं कि अच्छा संगीत, सृजनात्मक प्रस्तुतीकरण, बुद्धिमानी का क्षमायाचक, तत्कालीन सेवा की तकनीकियाँ परमेश्वर के द्वारा निर्धारित परमेश्वर के वचन के

प्रचार जो पवित्रात्मा की सामर्थ, जिसमें चिन्ह, अद्धभुत काम, चमत्कार और पवित्रात्मा के वरदान का विकल्प नहीं हैं (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:34)।

हमारा विषय **यीशु** है, हमारी विषय वस्तु **वचन** है, हमारा तरीका **पवित्रात्मा की सामर्थ** है, हमारी लगन **लोग** और हमारा लक्ष्य **मसीह के** समान परिपक्वता है।

कुछ ऐसी हवायें चल रहीं हैं जिनमें हमें **समायोजित और स्वीकारना** होगा ताकि हवा के साथ बह सकें कि कहीं ऐसा न हो कि इस वर्तमान नए संसार से अलग और पीछे न छूट जाएं।

तब, कुछ ऐसी बदलाव की हवाएं चल रही हैं जो हमें पवित्र सीमाओं को पार कराने में लगी हैं ताकि हम ईश्वरीय रीति-रिवाजों को भूल जाएं। हमें इन परिवर्तन की हवाओं को प्राचीन चिन्हों का प्रयोग करके **तूफानों के बीच स्थिर रहना** सीखना चाहिए।

मेरा साधरण आह्वान यहाँ यह है कि बाइबल के साथ रहें। **बाइबल ही हमारा प्राचीन चिन्ह है!**

5
समर्पण का आह्वान

* प्राचीन चिन्हों के साथ जीने के लिए अपने आप का समर्पण करें।
* परमेश्वर में और उसके वचन में गहराई हेतु अपना समर्पण करें। परमेश्वर और उसका वचन समय से ऊपर है। परमेश्वर का वचन तराजू है जिससे आप अपने जीवन को तोलेंगें, एक ऐसा पैमाना है जिसके द्वारा आप नापते हैं कि कुछ ऐसा तो नहीं है जो परमेश्वर के स्तर से नीचे है; पारदर्शक है जिसके द्वारा आप देखते और जाँचते हैं कि क्या सही और क्या गलत है। उस परिवर्तन की हवा को जो चल रही है अनुमति न दें कि वह आपको प्राचीन चिन्हों से समझौता न करने दे।
* याद रखें कि कुछ ऐसी सीमाएं हैं जिन्हें पार नहीं किया जाना चाहिए। कुछ ईश्वरीय रीति-रिवाज हैं जिन्हें लगातार बरकरार रखना चाहिए।
* अपने संसार में इन प्राचीन चिन्हों को ले जाने हेतु अपना समर्पण करें।
* उन परिवर्तन की हवाओं को अपनाऐं और समयोजित हो जाएं जो लाभदायक हैं। अन्य क्षेत्रों में इन्हीं प्राचीन चिन्हों के द्वारा जीएं!
* प्राचीन चिन्हों का प्रसार उपयुक्त रुप से करें।

वर्तमान पीढ़ी से मैं निवेदन करता हूँ कि आप अपना समर्पण करें कि आपका जीने का तरीका, बोलना और आपका व्यवहार ऐसा हो कि सम्पूर्ण मसीही जीवन को प्रकट करे। **जिस प्रकार का जीवन हम जीते हैं वही आने वाली पीढ़ी को हम सन्देश देते हैं।** इस वर्तमान पीढ़ी को यह निश्चय करना चाहिए कि आनेवाली पीढ़ी प्राचीन चिन्हों की सीमा में लगातार निर्माण करती जाए। उत्पत्ति का नियम कहता है कि **हम**

अपने ही प्रकार का उत्पादन करते हैं-हम जो हैं वही उत्पन्न करते हैं।

मेरी इच्छा है कि मैं आनेवाली पीढ़ी से बात करता और उन्हें सिखाता कि उनके दिमाग में सूचनाओं की भरमार है उसे छानकर किस प्रकार जाँचा जाए कि पता चले कि क्या गलत है और क्या सही है। मेरी इच्छा है कि मैं आने वाली पीढ़ी से बात करता और उन्हें सिखाता कि किस प्रकार प्राचीन चिन्हों के साथ बने रहें। मेरी इच्छा है कि मैं आने वाली पीढ़ी से बात करता और उन्हें सिखाता कि किस प्रकार वे ठीक से दीपक प्राप्त करें-बिना विद्रोह की आवाज निकालते हुए (उस गलती को न करें जो अबशालोम ने की थी) और अपरिपक्वता की आवाज के बिना (वह गलती न करें जो रहूबियाम ने की थी)। **परन्तु उनके प्रत्युत्तरों से अपने आप को नमूना बना सकते हैं, यदि हम, वर्तमान पीढ़ी, प्राचीन चिन्हों की सीमा में रहते है!**

> जिस प्रकार का जीवन हम जीते हैं वही आने वाली पीढ़ी को हम सन्देश देते हैं। इस वर्तमान पीढ़ी को यह निश्चय करना चाहिए कि आनेवाली पीढ़ी प्राचीन चिन्हों की सीमा में लगातार निर्माण करती जाए। उत्पत्ति का नियम कहता है कि हम अपने ही प्रकार का उत्पादन करते हैं-हम जो है वही उत्पन्न करते हैं।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशुद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्‌देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

➢ दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

➢ प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

प्राचीन चिन्ह का सन्देश ऐसा है जिसे मैं बहुत लम्बे समय से अपने हृदय में लिए पिफर रहा हूँ, जिसे मैं अब आपके साथ इस पुस्तक के माध्यम से बाँट रहा हूँ। शायद यह ऐसा सन्देश है जिसे मैं अपना अन्तिम संदेश बनाता और आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़ देता कि वे उस दौड़ को लगातार करते रहें जिसे मैं छोड़कर जाता।

संसार बदल रहा है। जैसा कल था वैसा आज नहीं हो सकता है! हमें नए संसार के साथ चलना है। हमें नए संसार की संस्कृति के शब्दों और चिन्हों का प्रयोग करके इसके सम्मुख अनन्त सत्यों को प्रकट करना है। तौभी ऐसा करने में खतरे हैं जिन्हें हमें समझना है। हम यूँ ही संस्कृति में से बातों को लेकर समयानुकूल सत्यों को प्रकट नहीं कर सकते हैं। हम नए संसार की संस्कृति को लागू करने, और स्थापित करने के लिए प्राचीन चिन्हों के साथ समझौता नहीं कर सकते हैं।

कुछ ऐसी हवायें चल रहीं हैं जिनमें हमें **समायोजित और स्वीकारना** होगा ताकि हवा के साथ बह सकें कि कहीं ऐसा न हो कि इस वर्तमान नए संसार से अलग और पीछे न छूट जाएं। तब, कुछ ऐसी बदलाव की हवाएं चल रही हैं जो हमें पवित्रा सीमाओं को पार कराने में लगी हैं ताकि हम ईश्वरीय रीति–रिवाजों को भूल जाएं। हमें इन परिवर्तन की हवाओं को प्राचीन चिन्हों का प्रयोग करके **तूपफानों के बीच स्थिर रहना** सीखना चाहिए।

मेरा साधरण आह्वान यहाँ यह है कि बाइबल के साथ रहें **बाइबल ही हमारा प्राचीन चिन्ह है!**

आशीष रायचूर